अभ्यास – अभ्यास – अभ्यास

इंसान को स्वास्थ्य चाहिए।
इंसान को सुख चाहिए।
इंसान का दुःख दूर होना चाहिए।
इंसान को मुक्ति चाहिए।
इंसान को जन्मरहित पद चाहिए।

आकांक्षाएँ तो कई हैं मगर उन्हें पाने के लिए वह करता क्या है?

परिश्रम करना उसे पसन्द नहीं है।
सरलता से सब कुछ पाना चाहता है।
गुरु के चरण पकड़कर सब कुछ पाना चाहता है।
मंदिर में मूर्ति के सामने प्रसाद चढ़ाने या प्रार्थना करके सब कुछ पाना चाहता है।

क्या उसकी बुद्धि इतनी मुरझा गई है कि वह मुरझा यह नही समझता कि सब कुछ पाने के लिए प्रयास जरूरी है।

क्रिकेट सीखने के लिए कितना अभ्यास करता हैं?
संगीत सीखने के लिए कितनी साधना करता है?
धन कमाने के लिए कितना परिश्रम करता है?
पत्नी और बच्चों के लिए कितना श्रम करता है?
शादी करने और घर बनाने के लिए कितनी मुश्किलें झेलता है
कार्यस्थल से घर आते समय गाड़ी चलाने में कितनी सावधानियाँ बरतता है?

सब जानते हैं इन सब कामों के लिए श्रम करना पड़ता है पर कोई इसके लिए पूजा या व्रत नहीं करता, गुरु के चरण नहीं पकड़ता, मंत्र जाप नहीं करता अपितु मेहनत करता है। बिना मेहनत के कुछ नहीं मिलता। स्वास्थ्य चाहते हैं ता डॉक्टर के पास जाने मात्र से लाभ नहीं हागा। दवा लेनी होगी, परहेज़ करना होगा। तभी बीमारी दूर होगी।

मुक्ति को भी मनुष्य तुरन्त चाहता हैं, गुरु भी बनना चाहता है लेकिन उसके योग्य साधना नहीं करता। हर काम तुरन्त हो जाए बिना प्रयास के पर ऐसा हो नही सकता। लोग आकर मुझसे कहते हैं कि अभी तक मेरी तीसरी आँख खुली नहीं है। कोई उनसे पूछे कितनी साधना की? कहाँ गई उनकी विचक्षणा, कहाँ गया उनका शास्त्रीय दृक्पथ।

स्वास्थ्य के किसी सूत्र का पालन नहीं करेंगे पर स्वास्थ्य चाहेंगे। मुक्ति के सूत्रों का पालन और साधना नहीं करेंगे लेकिन मुक्ति को चाहेंगे। ऐसे मनुष्यां को बुद्धि कब आएगी?

पिरामिड़ सोसाइटी के ध्यानियों के लिए एक ही संदेश है- अभ्यास व हमेशा अभ्यास।

अभ्यास शरणम् गच्छामि । अभ्यास शरणम् गच्छामि